Indian J. Soc. & Pol. 11 (01): 133-134 : 2024 **ISSN : 2348-0084 (PRINT)**
(July-December 2023), 29 February 2024 **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र की नवीन चुनौतियाँ व भारत–चीन सम्बन्ध

वेद प्रकाश सिंह[1]

[1]सहायक आचार्य ,राजनीति विज्ञान विभाग, बाबा राघवदास भगवानदास पी0जी0 कालेज, आश्रम बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश, भारत

ABSTRACT

भारत और चीन एशिया महाद्वीप के दो विशाल जनसंख्या वाले देश हैं। दोनों की प्राचीन संस्कृतियों के मध्य पुराना सम्बन्ध रहा है परन्तु विश्वास का सम्बन्ध कभी बन नहीं पाया। हालाकि भारत–चीन सम्बन्ध को 'संघर्षो के सम्बन्ध' के रूप में देखा जाय तो इसमें आश्चर्य नहीं होगा। वर्तमान में आधारभूत राजनैतिक समस्याओं के साथ ही साथ राजनैतिक व सामरिक रवैये का विश्लेषण आज सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से किया जा रहा है। दोनों देशों के बीच टकरावों को निबटाने तथा युद्ध के खतरों को दूर करने के विषय में गम्भीरता से विचार–विमर्श होना चाहिए। आज शक्ति–संतुलन की अवधारणा में विश्व–परिदृश्य में नवीन आयामों को गतिमान किया है। आर्थिक उपनिवेशवाद को मजबूत करने के लिए भारत को अपने पड़ोस में बदल रही गतिविधियों को नियंत्रित करना ही होगा। अन्यथा पड़ोसी राष्ट्रों को आर्थिक गुलामी से बचाना कठिन हो जायेगा। विश्व नये उपनिवेशवाद की ओर अग्रसर है, जिसे आर्थिक उपनिवेशवाद के रूप में देखा जा रहा है। प्रस्तुत शोध–पत्र के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है कि भारत और चीन के मध्य सम्बन्धों में हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के चुनौतियों को प्रस्तुत कर रहा है जो टकराव की मुख्य वजह है।

KEYWORDS: *अन्तर्राष्टीय सम्बन्ध, हिन्द–प्रशान्त, चीन, क्वाड*

आज विश्व परिदृश्य काफी तेजी से परिवर्तित हो रहा है। विश्व के सभी देश अपने–अपने सम्बन्धों को विविध प्रकार से सुधारने में लगे है, परन्तु चीन पड़ोसी होते हुए भी भारत को रणनीतिक कारणों से कड़ी चुनौती दे रहा है। चाहे वह कूटनीतिक रूप से रहा हो अथवा हिन्द महासागर में स्थित देशों में अपनी उपस्थिति के माध्यम से। प्रशान्त क्षेत्र की सुरक्षा की अवधारणा को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नवीन जीवन दिशा देने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत–चीन के बीच सामुद्रिक प्रतिद्वन्दिता के महत्व को व्यक्त करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ में कहा कि ''एक समय था जब समुद्र हमें जोड़ते थे लेकिन आज समुद्र साइबर स्पेश और अन्तरिक्ष संघर्ष के नये रंगमंच बन गये है।''

प्राकृतिक संतुलनकर्त्ता

आज भारत व चीन अपने पड़ोसी राष्ट्रों से नवीन सम्बन्धों को गति देने में लगे है ताकि उन्हें नवीन बाजार, खनिज तत्व व ऊर्जा के नये क्षेत्र मिल सकें। दोनों देशों ने पुनर्संरचना सम्बन्धों को प्रारम्भ भी कर दिया है परन्तु माना यह भी जा रहा है कि जहाँ चीन का अभ्युदय इस क्षेत्र की संरचना को नवीन आयाम देगा वही कुछ लोगों का यह भी मानना है कि भारत, चीन के लिए प्राकृतिक संतुलनकर्त्ता है। शक्ति परिवर्तन में जो तीसरा तर्क दिया जाता है वह वैश्वीकरण व व्यापारिक क्षेत्र में समुद्र का प्रयोग भारत और चीन के लिए इतिहास में इतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना वर्तमान में है।

वैश्वीकरण व व्यापारिक क्षेत्र में समुद्र का प्रयोग भारत व चीन के लिए पहले उतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना आज है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों की मुख्य समस्या राष्ट्रों के आपसी सम्बन्धों में छिपी हुई है। लगभग 90 प्रतिशत विश्व व्यापार आज समुद्र के माध्यम से ही हो रहा है। आज लगभग ढ़ाई अरब लोगों के लिए समुद्र जीवन रेख का कार्य कर रही है। उम्मीद की जा रही है कि भारत व चीन का उदय हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र की संरचना को नवीन आयाम देगा। साथ भारत चीन के लिए प्राकृतिक सन्तुलनकर्त्ता भी है। (मलिक, 2011)

गैर–परम्परागत सुरक्षा को लेकर हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में कई तरह की चुनौतियां व तनाव के क्षेत्र बनते जा रहे है। जिसमें प्रमुखतयाः आतंकवाद,, समुद्री डकैती, मनुष्य तस्करी, पर्यावरण में बदलाव के रूप में सामने आ रही है। समुद्री डकैती, अरब की खाड़ी के सोमालिया के जलीय क्षेत्रों में प्रमुखता देखने को मिलती है। वही उत्तरी अरब सागर में सामुद्रिक जो मुख्य तया भारत के मुम्बई आतंकवादी हमला ड्रग तस्करी के साथ ही गम्भीर मुद्दा बन कर सामने आ रहा है। अरब सागर व बंगाली की खाड़ी से ड्रग तस्करी म्यांमार और अफगानिस्तान में व्याप्त है।दक्षिण एशिया का यह क्षेत्र विश्व से अलग समस्याओं से ही नहीं जूझ रहा बल्कि सम्पूर्ण विश्व आतंकवाद जैसी गम्भीर समस्या से परेशान है। यह सम्पूर्ण विश्व के विकास में बाधक बन गये है।(कुमार, 2014)

चीन द्वारा भारत के पड़ोसियों से जो सामरिक और आर्थिक सम्बन्ध है उसे भारत भरतीय मीडिया ''स्ट्रिंग ऑफ पर्ल'' की संज्ञा देती है जो चीन के लिए आर्थिक कुटनीति सर्वोपरि को दर्शाता है, किसी अन्य देश का हित उसके लिए मायने नहीं रखता। स्ट्रिंग ऑफ पर्ल के निर्माण के पीछे मुख्य उद्देश्य अपने प्रतिद्वंदी को कमजोर दिखाना है। (भसीन, 2003)

चीन के विशाल तेल भण्डार का निर्माण करने के लिए दो सामरिक गलियारें की योजना पर काम चल रहा है। ये

1: Corresponding Author

गलियारें भारत के दोनों ओर से गुजरते है। इसके माध्यम से वह फारस की खाड़ी और अफ्रीका से आने वाले तेल और गैस की आपूर्ति सुचारू रूप से रखना चाहता है। जिसका उद्देश्य संसाधनों के परिवहन पर खर्च को कम करना और अमेरिकी प्रभाव वाले समुद्री मार्गो से बचना है। इस तरह का एक गलियारा बंगाल की खाड़ी से होकर निकलता है। यह वर्मा के पास से होता हुआ दक्षिण चीन तक पहुचता है। इस गलियारें के निर्माण होने से चीन की पहुच भारत के दक्षिण–पश्चिम समुद्री तट तक हो गई। वहीं दुसरा गलियारा पाकिस्तान में चीन द्वारा ग्वादर बंदरगाह से काराकोरम पर्वत श्रृंखला से होते हुए चीन तक पहुचता है। राजनीतिक व कूटनितिक गलियारों के लिए वह रणनीतिक व्यवस्था को आगे बड़ा रहा है। जिससे विश्व की आर्थिक व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन हो सकें।(कौशिका और सिंह, 2014)

भारत व चीन के मध्य सीमा विवाद भी काफी पुराना मुद्दा है। 1962 में भारत व चीन के मध्य हुए युद्ध से इस समस्या का जन्म हुआ, जिसका हल आज तक नहीं हो पाया। यह समस्या दिन–प्रतिदिन गम्भीर होती चली जा रही हैं। वास्तविक नियन्त्रण रेखा पर चीनी सेना की आये दिन नयी–नयी हरकतो और हिन्द महासागर में चीन के दखल को ध्यान में रखते हुए भारत में अपने रक्षा बजट में भारी बढ़ोत्तरी की हैं। रक्षा बजट में बढ़ोत्तरी समय के माँग के साथ ही सैन्य संसाधनों में भारी इजाफा व शक्ति के लिए प्रतिद्वंद्विता का प्रभाव भी हैं। जिसके बारे में चीन के प्रधानमंत्री ने कहा कि ''हम एक सुदृढ़ नौसेना शक्ति बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं।'' नौसेना शक्ति में वृद्धि कोई पारम्परिक घटना न होकर नवीन शीतयुद्ध की ओर बढ़ रहें विश्व की झलक हैं। (बेंकटशामी और जार्ज, 2012)

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एवं शीतयुद्ध के दौरान हिन्द महासागर सघर्ष क्षेत्र के रूप में दिखा। जिसमें शान्ति स्थापना हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ में बहुत प्रयास किया परन्तु असफल रहा। इस क्षेत्र में जितना लोहा, गैस, तेल, एवं अन्य खनिज पाया जाता हैं उतना अन्यत्र कही नहीं पाया जाता हैं। इसलिए इस क्षेत्र विशेष में जो विकास करेगा, वहीं विश्व की प्रमुख महाशक्ति बन जायेगा। पिछले दशको में भारत की शक्ति व प्रभाव में जो अभूतपूर्व वृद्धि हुई है उससे चीन की चिन्तायें बढ़ गयी हैं। इस सम्बन्ध में चीन की मुख्य समस्या समुद्री मार्गो की सुरक्षा जिसके तहत पाकिस्तान के बलूचीस्तान के ग्वादर, श्रीलंका के हम्मनबटोटा, बांग्लादेश के सितवें, म्यांमार के क्याक्फ्यू बन्दरगाह पर उपस्थिति व समुद्री संचरण रेखाओं पर स्थिति की मजबूती महत्वपूर्ण हैं। भारत के पड़ोसी राष्ट्रों पर चीन की उपस्थिति व हिन्द प्रशान्त क्षेत्र में भारत के हितों का गहरा जुड़ाव व हित में भारत द्वारा सामुद्रीक सुरक्षा के प्रति सजग करती है। (शरण और सिन्हां, 2012) भारत द्वारा दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों के साथ सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी एवं भारत की उपस्थिति चीन को प्रसन्द न आना एक प्रमुख समस्या हैं। जिसमें मुख्य रूप के भारत–वियतनाम सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण हैं। सन् 2008 में मुम्बई पर आतंकवादी हमला भारत की समुद्री मार्ग से रक्षा कमजोरियों को दर्शाता है। आतंकवादियों ने विश्व का परिदृश्य तो बदला ही साथ ही मानव जाति के लिए खतरा भी बन गये हैं। चूकि विश्व की अधिकांश जनसंख्या हिन्द–प्रशान्त परिक्षेत्र में ही निवास करती है। अतः इसका सामरिक महत्व बढ़ जाता हैं।

हालाकि भारत का उच्च रक्षा प्रबन्धन और सैन्य तैयारी चीन की तुलना में द्वितीय स्तर का हैं। इस सन्दर्भ में दो तथ्य महत्वपूर्ण है। पहला यह कि दो दशकों से तीनो ही सशस्त्र बलों में हथियारों में कमी रही है तो दुसरी ओर समान सवयावधि में भारत बड़े सैन्य हथियारों एवं विमानों के खरीद के मामले में दुनिया का सबसे बड़ा आयाताक देश भी बन गया हैं। सी0 राजा मोहन के अनुसार हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र त्रिमुखी सामरिक क्षेत्र बन गया है जिसमें अमेरिका, चीन व भारत सामुद्रिक सर्घष के प्रमुख केन्द्र बन रहे हैं। संसाधनों पर पकड़ युद्ध और शान्त दोनो काल में महत्वपूर्ण होता है। एशिया में प्राकृतिक संसाधनों की भू–राजनितिक स्थिति दिन–प्रतिदिन गम्भीर होती दिख रही है। उर्जा आयात पर बढ़ती निर्भरता के कारण नौसैनिक शक्ति पर दबाव बढ़ता जा रहा है। संसाधनों की यही दौर एशिया की सुरक्षा को खतरे में डाल रही है। जो यह स्पष्ट करता है कि जल संधियों पर प्रभुता महत्वपूर्ण व अवश्यक है।

निष्कर्ष

संघर्ष के विभिन्न आयामों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत को तत्काल सामुद्रिक सुरक्षा आयोग गठित करना चाहिए जिससे व्यापक तौर पर जटिल होती सामुद्रिक राष्ट्रीय सुरक्षा स्थिति पर चर्चा व उनकी कमजोरियों को दूर किया जा सके तथा हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र में शान्त लाने का प्रयास किया जा सकें क्योकि इस क्षेत्र में महाशक्तियों के प्रवेश ने हिन्द–प्रशान्त क्षेत्र के समुद्र में कोतुहल को बढ़ा दिया है साथ ही यह भी स्पष्ट करता है कि जलसंधियों पर प्रभुता महत्वपूर्ण व आवश्यक हैं जो समकालीन सघर्ष के केन्द्र के रूप में विकसित हो रहा हैं।

REFERENCES

शरण, हरि. एवं सिन्हा, हर्ष कुमार (2012), हिन्द महासागरः चुनौतियाँ एवं विकल्प, प्रत्यूष पब्लिकेशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण।

राष्ट्रीय सहारा, हस्तक्षेप, नई दिल्ली, 1 जुलाई 2023

कुमार, सुमित (2014) स्टेबिलिटी एण्ड ग्रोथ इन साउथ्र एशिया, नई दिल्ली, पेंटागान

कौशिवा, प्रदीप, व अभिजीत सिंह (2014) जियोपॉलिटिक्स ऑफ दी इण्डो–पेसिफिक, नई दिल्ली, कनिष्क

मलिक, मोहन (2011) चाइना एण्ड इण्डिया : ग्रेट पॉलिटिकल राइवल्स, यू एस ए, फर्स्ट फोरम

बेकटशामी कृष्णप्पा एण्ड जॉर्ज प्रिन्सी (2012) ग्रैंण्ड स्टेटजी फॉर इण्डिया 2020 एण्ड बियाण्ड, पेण्टागन सिक्यूरिटी एण्टरनेशनल , नई दिल्ली, आईडीएसए

मोंहन, सी राजा (2013) समुद्र मंथन–साइनो–इण्डिया राइवलरी इन इण्डो पैसिफिक